

पाठ-8 द्रोणाचार्य

पांचाल नरेश द्रुपद और आचार्य द्रोण ने भारद्वाज आश्रम में एक साथ शिक्षा ग्रहण करी थी ।

राजकुमार द्रुपद ने एक बार उत्साह में आकर कह दिया कि राजा बनने के बाद मैं तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा ।

आचार्य द्रोण का कृपाचार्य की बहन से विवाह कर पुत्र अश्वत्थामा को जन्म दिया ।

परशुराम द्वारा द्रोण को धनुविद्या सिखाने की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई ।

द्रुपद के राजा बनने पर धन की लालसा हेतु द्रोण का मित्रता के समय किए वादे को याद कराया गया ।

द्रुपद ने वादे को पूरा करने के स्थान पर द्रोण का अपमान किया गया ।

अपमानित होने पर द्रोण छिपकर कृपाचार्य के यहाँ रहे ।

पांडवों की गेंद निकालने में द्रोण द्वारा मदद की गई ।

द्रोण के द्वारा दी गई मदद के बदले पांडु और कुरु राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखाने का भार मिला ।

गुरुदक्षिणा के रूप में द्रोण ने पांचालराज को कैद कर अपने सामने खड़ा करने के लिए कहा ।

अर्जुन द्वारा युद्ध करने पर द्रुपद को हराकर
आचार्य द्रोण को गुरुदक्षिणा दी।

द्रोण के इस कार्य से द्रुपद को ठेस पहुँची और
उसने कठिन तप और व्रत करने प्रारंभ किए।

द्रुपद द्वारा कठिन व्रत करने का फल द्रोण को
मारने हेतु एक पुत्र और अर्जुन से विवाह करने हेतु
एक कन्या को प्राप्त करना था।

कामना पूरी होने पर द्रुपद ने धृष्टद्युम्न नामक पुत्र
और द्रौपदी नामक पुत्री को जन्म दिया।